God's Power & God's Blessings

हम ईश्वर के साथ जियेंगे

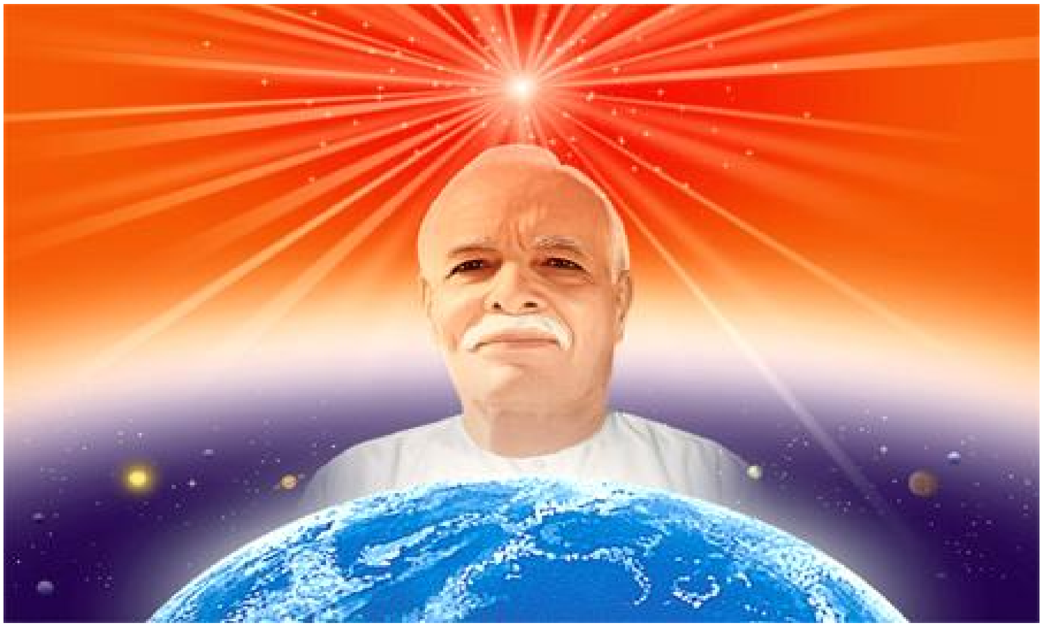

जहाँ हम रहें वहाँ स्वर्ग हो ये किसे अच्छा नहीं लगेगा। अब हम चाहे जहाँ भी रहे मूल सम्बन्ध तो हमारा पृथ्वी से ही रहेगा, चाहे हम आकाश मे ऊँची उडान पर हो, गहरे में नीले समुद्र में अथवा बेहद का खुलापन लिए हुए अंतरिक्ष में। हम माँ के गर्भ में हो अथवा माँ की गोद, में बाप के कन्धे पर वा बाप के साथ में तो भी हमारा मूल सम्बन्ध धरती रुपी माँ एवं परमपिता परमात्मा रुपी बाप से अविनाशी रुप से रहेगा ही।

धरती रुपी माँ की बात तो लगभग सभी लोगों के जहन मे उतरती है। परन्तु जैसे ही परमपिता परमात्मा की बात आती है तो कई लोग तो जैसे बिदक उठते है। उन्हे, ईश्वर की कोई सत्ता है इसमे ही संदेह है। यूं तो कहावत है जिसकी रचना इतनी सुन्दर वह कितना सुन्दर होगा। अतः रचना अपने रचता के अस्तित्व का स्वतः ही अहसास कराती है। ये धरती रुपी गृह जो कालान्तर मे देवभूमि था। स्वर्ग कहलाता था। युगो की स्थिति के अनुरुप सतयुग कहलाता था। वह सतयुग जहाँ मानव, जीव व प्रकृति अपनी सतोप्रधान अवस्था में थे। अपनी ऐसी सतोप्रधान अवस्था के ही कारण उनका सौन्दर्य अद्वितिय था। उनका रुप मनोहारी एवं सुखकारी था। मानव का कर्म सुखदायी व आनन्ददायी था।

यदि स्वर्ग के प्रति मानव जाति का आकर्षण है, अथवा धरती माँ की पुकार (मेक मी हेविन) के प्रति हम सजग है। यदि हम स्वयं को इसके लिए उत्तरदायी समझते हैं कि धरती माँ को उसका खोया हुआ स्वरुप पुनः प्राप्त हो, तो हमे इस सिद्धांत को अंगिकार

करना ही होगा कि ''हम ईश्वर के साथ जियेंगे''। इस सिद्धांत की वास्तविकता पर जब हम दृष्टि डालते है तो पाते हैं कि धरती को स्वर्ग बनाने के लिए ये सिद्धांत क्यों जरुरी है- यह पृथ्वी गृह अपने जिस स्वर्गिक रुप मे था इसे हमसे बेहतर इसका रचनाकार जानता है। अतः रचनाकार से जुड़े बिना न तो हम इसके मूल स्वर्गिक रुप को समझ सकते हैं और न ही उसके ज्ञान से परिचित हो सकते है जिस आधार पर हमारे प्रयास सार्थक हो। यह गृह जो कभी स्वर्ग था इसे इसका वह रुप प्रदान करने के लिए निश्चित ही ऐसी विद्या चाहिये जिसके आधार पर मानव द्वारा किये प्रयास वह परिणाम लायें। वह विद्या परमात्म विद्या ही है जिसके आधार पर यह घरा पुनः स्वर्ग लोक बन सकती है। अतः उपरोक्त दृष्टि से समझने पर मालूम होता है कि ईश्वर के साथ जीने से ही हम पृथ्वी गृह को स्वर्ग बनाने का ज्ञान व शक्ति अर्जित कर सकते है। अतः जिस भी मानव के दिल मे धरती के प्रति प्यार है, जिस गृह पर हम रह रहे है उसे सुरक्षित रखने का भाव है, इससे भी ऊपर उठकर जो इसे इसका खोया हुआ स्वरुप प्रदान करने के लिए संकल्पित एवं प्रयास रत है।

उन्हे चाहिये वे जीवन के इस सामान्य से सिद्धांत को अंगिकार करे कि -''हम ईश्वर के साथ जियेंगे''। इस सिद्धांत के अनुसरण से वे ईश्वरीय विद्या एवं ईश्वरीय शक्ति से स्वयं को सम्पन्न कर परमार्थ को सिद्ध करने में सफल होंगे।

ईश्वरीय अस्तित्व एवं शक्ति

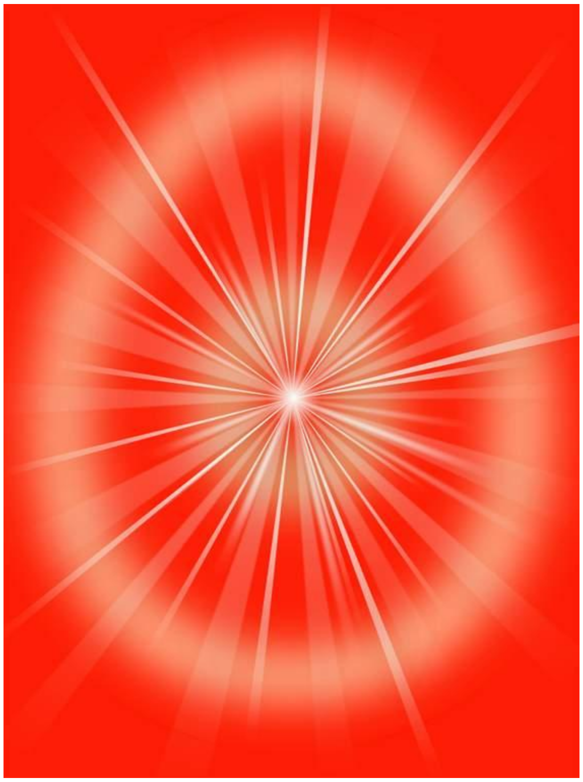

हाँ ‘‘हम ईश्वर के साथ जियेंगे’’ यह लोगों के दिलो की आवाज थी। यह सिद्धांत किसी ने लोगो पर थोपा नही था। इसे उन्होने दिल से, स्वेच्छा से स्वीकार किया था। वे ईश्वर के साथ जीने के लिए उत्सुक थे। दुविधा थी तो बस एक वे उसे सर्वव्यापक समझने के बावजूद भी उसकी उपस्थिति का अनुभव नहीं कर पा रहे थे। पत्ता-पत्ता भी ईश्वर की मर्जी से हिलता है इतना समर्थ मानते हुए भी वे उसकी शक्तियों से स्वयं को समर्थ नहीं बना पा रहे थें। इसी कारण वे धरती के सर्व श्रेष्ठ प्राणी होते हुए भी अपने प्रिय पृथ्वी गृह को उसका मूल स्वर्गिक स्वरुप प्रदान करने मे समर्थ नही थे।

वे ईश्वर के अस्तित्व को मानते थे परन्तु उसके स्वरुप को न जानने के कारण अथवा परमात्मा के यर्थात सवरुप की अनुभूति न होने के कारण उसे वे धर्म के पूजा स्थलो अथवा तीर्थो पर अनुभव करने के लिए वहाँ जाते रहे। विभिन्न धर्मो के अनुरुप बने पूजा स्थलो पर स्थापित मूर्तियो, पीरो, धर्म गुरुओं, धर्मगृन्थो, धर्म स्थापको आदि मे ही वे मन लगाकर ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकारते रहे। यह लोगो का भावनात्मक पक्ष रहा जिसके कारण वे आस्तिक कहलाने मे आये। जबकि इस भावनात्मक पक्ष मे न बहने वाले और ईश्वर की सत्ता को न महसूस करने वाले लोग नास्तिक कहलाये। यदि यथार्त दृष्टि से देखा जाये तो भावनात्मक दृष्टि से पूजा घरो मे भगवान को देखने वाले लोग भी नास्तिक ही थे क्योंकि उसके यर्थात परिचय व अनुभूति से वे भी अनभिज्ञ ही थे। सर्व शक्तिवान ईश्वर से अपना सम्बन्ध जुड़ा होने के बावजूद भी वे स्वयं को विकृतियों से मुक्त करने में असमर्थ थे। ऐसे दुविधा मे फंसे हुए लोग जीवन के इस सामान्य सिद्धांत कि ‘‘हम ईश्वर के साथ जियेंगे’’ की पालना करने को आतुर होते भी धरती माँ की पुकार (मेक मी हेविन) को पूरा करने में आगे नही बढ़ पा रहे थे। पर वे इस पुकार को पूरा करने के लिए दृढ निश्चयी थे।

जैसे धरती पुत्रो के कानो में ये आवाज (मेक मी हेविन) गूँज रही थी। इसी आवाज को इस सृष्टि के नियन्ता परमपिता परमात्मा ने भी सुना था। दुःखहर्ता सुखकर्ता कहे जाने वाले ईश्वर ने साधारण मानव तन का आधार ले स्व के ज्योति स्वरुप का बोध कराया। स्वयं, स्वयं का यथार्त परिचय दे स्वयं के अस्तित्व का बोध कराया। धर्म पिताओ का भी पिता व देवताओ का भी रचता स्वयं को बताकर अपनी शक्ति का बोध कराया। इस धरा को पुनः देवलोक स्वर्ग बनाने का उदघोष कर माँ की पुकार को सुन उसे पूरा करने का बिगुल बजाया। साकार मनुष्य लोक से भी ऊपर परलोक (परमधाम) के निवासी परमात्मा ने अपना नाम शिव बताकर अपने कल्याणकारी होने का सभी को परिचय कराया। सर्व गुणों के भंडार, शान्ति के दाता, सर्व शक्तियों के दाता, सर्व सुखो के दाता, आनन्द के सागर परमपिता परमात्मा शिव ने जन जन पर ज्ञान वर्षा कर स्वयं के ज्ञान

सागर होने का ऐसा प्रभाव छोड़ा कि वह ज्ञान, मुरली कहलाने लगा और उसके पिपासे बन उन्हे सुनने लिए देश-विदेशो से भी लोग दौड़े- दौड़े आने लगे।

युगो के इस परिवर्तन चक्र में पिड़ित मानवता को परमात्मा के ज्ञान का ऐसा सम्बल मिला कि मानव में धरती माँ की पुकार को पूरा करने का हौसला बढ़ने लगा। परमात्मा के द्वारा अर्जित ज्ञान से अब उन्हे ईश्वर के अस्तित्व का यथार्त बोध हो गया। परमपिता परमेश्वर के यथार्त रुप ज्योति स्वरुप मे उनका ध्यान ऐसे लगा कि वे स्वं को शांन्ति व शक्ति से भरपूर महसूस करने लगे। ''हम ईश्वर के साथ जियेंगे'' यह सिद्धांत अब उनके लिए मात्र एक वाक्य नही था बल्कि उनके जीवन के लिए ईश्वर का साथ एक बहुत बड़ा सम्बल था। सर्व शक्तिवान ईश्वर का साथ जन जन को ईश्वरीय ज्ञान, मानवीय व दैवी गुणों, आध्यात्मिक व नैतिक मूल्यो से इस प्रकार सम्पन्न बना रहा था कि वे दिन प्रति दिन सशक्त बनते जा रहे थे। उन्हे ईश्वर का साथ इस प्रकार उर्जा से सम्पन्न कर रहा था कि अब वे पृथ्वी गृह की आवाज (मेक मी हेविन) को पूरा करने के लिए क्रियाशील थे। आज वे ईश्वर का साथ पाकर अथक हो धरती माँ को उसका स्वर्गिक रुप प्रदान करने मे सतत् प्रयत्नशील थे।

ईश्वरीय कर्तव्य एवं उनकी कार्य विधि

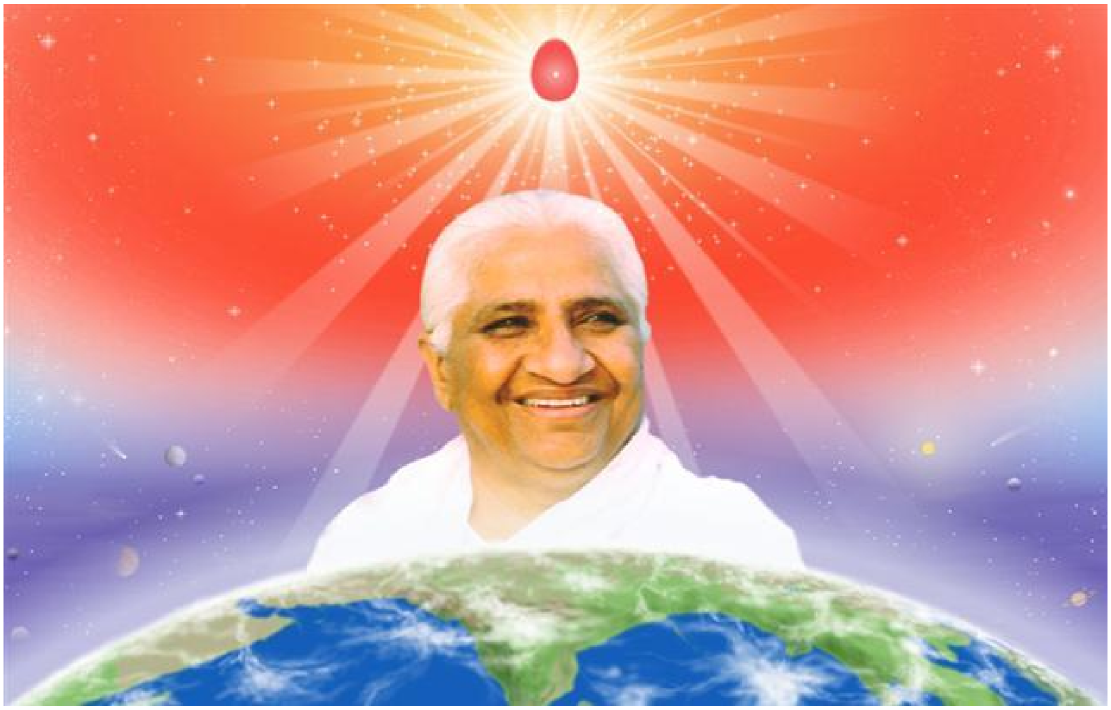

सुनते आये प्रभु के खेल निराले । जब प्रभु निराला है तो निश्चित है उनके खेल भी निराले ही होगें। पहला खेल तो उनका देखने मे यही आता वे इस पृथ्वी लोक को स्वर्ग बनाने मे तत्पर पर कोई-कोई ही जानते उनका यह कार्य खेल -खेल में चल रहा। अब कोई पूछे कहाँ चल रहा, तो जो इस खेल के साक्षी जरुर वे तो यही कहेगें खास माउण्ट आबू राजस्थान में और आम पूरी दुनिया के अनेक भागो में। माउण्ट आबू ठहरा प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का मुख्यालय। भारत है अविनाशी खंड, भारत है परमपिता परमात्मा की अवतरण भूमि। इस महान भूमि पर ही ज्योति स्वरुप ईश्वर ने दादा लेखराज को अपना साकार माध्यम बनाया और अलौकिक नाम दिया प्रजापिता ब्रह्मा। अब धरती माँ की पुकार मुझे स्वर्ग बनाओ (मेक मी हेविन) जब धरा को स्वर्ग बनाने की बात आती तो इस भूलोक पर है प्रकृति की अदभुत सत्ता व मानव जीवन की सत्ता का अदभुत संगम। संसार मे तीन सत्ताओ का खेल है एक है आत्मा की सत्ता जो मानव रुप मे अपना पार्ट बजाती । दूसरा है प्रकृति की सत्ता जो मानव द्वारा शोभित अथवा प्रदुषित होती। प्रकृति मानव आत्माओ के सूक्ष्म प्रभावो को ग्रहण कर उसी अनुरुप भी प्रभावित होती। तीसरी सत्ता है ईश्वर की सत्ता जो सर्वोपरि सत्ता है। इस भूलोक पर विज्ञान के प्रभाव से मानव को अनेक साधन उपलब्ध होते लेकिन जब प्रकृति का अतिदोहन होने लगता तो प्रकृति का मनोहारी रुप बिगड़ने लगता। जब मानव बुद्धि दूषित हो विज्ञान का दुरुपयोग करने लगती हो असन्तुलन की स्थिति पैदा होती। मानव के भ्रष्टाचारी, व्यभिचारी, विकारी जीवन के कारण संसार की सभ्यता प्रभावित हो कलुषित बन जाती। पापाचार, अनाचार, दुरव्यवहार का भार इस भूलोक पर ऐसा बढ़ता कि धरती माँ इस बोझ को असहय समझती और पुकार उठती (मेक मी हेविन)

गुह्यता से देखा जाये तो पृथ्वी लोक पर इस भार का मुख्य कारण बने इस पर रहने वाले मानव। अतः इस भूलोक को स्वर्ग बनाने के लिए पुनः मानवो को ही निमित्त बनना पड़ेगा। मानव को इस जिम्मेवारी का एहसास कराने , परिवर्तन के लिए ज्ञान व शक्ति से सम्पन्न करने के लिए ही ईश्वर पिता को मानव शरीर का आधार लेना पडा। मनुष्य -मनुष्य की भाषा को समझता है इसलिए ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा को ज्ञान देने के लिए आधार बनाया। शास्त्रो में जो वर्णन आता है कि ब्रह्मा ने सृष्टि रची। इस प्रकार परमेश्वर ने ब्रह्मा को निमित्त बनाकर उनके द्वारा इस पृथ्वी लोक को स्वर्ग बनाने का कर्तव्य प्रारम्भ किया। ये परमात्मा का द्विय और अलौकिक कर्तव्य लोगो को ऐसा रास आने लगा कि लोग इस कर्तव्य के प्रति सजग हो समूह बद्ध हो गये। भारत की सीमाओं से परे पूरे विश्व को अपना परिवार मानने वाले ऐसे लोगो का समूह ‘‘प्रजापिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय’’ के रुप मे विश्व विख्यात हो गया। इस अनोखे विश्व

विद्यालय में हर वर्ग, जाति, आयु व अनेक धर्मो से सम्बन्ध रखने वाले लोग ब्रह्माकुमारियां व ब्रह्माकुमार के रुप में जाने गये। इस विश्व विद्यालय की स्थापना कर ईश्वर ने इस पृथ्वी लोक को स्वर्ग बनाने की इतनी सहज कार्य विधि अपनाई जो हर मानव को पसन्द आई। विश्व कल्याणकारी परमपिता परमात्मा ने विश्व की सर्व आत्माओ के लिए हस विश्व विद्यालय को खुला रखा।

ईश्वर का सन्देश था -''नर ऐसी करनी करे जो श्री नारायण पद को पाये, और नारी ऐसी करनी करे जो श्री लक्ष्मी पद को पाये''। स्वभाव से ही कुछ नया करने के उत्सुक, नया पाने के उत्सुक मानव के लिए यह सन्देश इतना प्रभावी रहा कि उन्होने इस सन्देश को न केवल सहर्ष स्वीकार किया बल्कि उसे आत्म सात करने के लिए ईश्वर द्वारा स्थापित उन सभी नियमों व मर्यादाओं की पालना के लिए स्वेच्छा से वचन बद्ध हो गये। ईश्वर द्वारा सिखाया गया राजयोग उन्हे इतना रास आया कि वे जीवन के नित कर्म करते हुए भी जीवन में शान्ति व आनंद का प्रवाह महसूस करते। राजयोग से लोगों की जीवन शैली में ऐसा सकारात्मक परिवर्तन आया कि अब उनका सोच व उनके कर्म परस्पर एक-दो को तथा प्रकृति को सहयेग देने वाले हो गये।

लोगो की सकारात्मक राजयोगी जीवन शैली से धरती के स्वर्ग बनने की सम्भावनाएं प्रबल होने लगी। प्रकृति की सत्ता एंव आत्मा की सत्ता के धरातल पर इस खेल में जहाँ विश्व मे शांति, प्रेम को बढ़ावा देने के लिए लोग राजयोगी जीवन शैली अपनाकर अपने श्रेष्ठकर्मो से सहयोग दे रहे थे। वहीं अहंकारी, अति विश्वासी, भ्रष्टाचारी, कट्टरपंथी, असंयमी, असन्तुलित जीवन वाले लोग अपनी शोषण की प्रवृतियों के कारण विनाश के खतरो से खेलने को आतुर थे। इन हालातों मे परमात्मा के एक और अदभुत कर्तव्य (प्रकृति का भी परिवर्तन) के संकेत प्राप्त हो रहे थे।

यह भूलोक जो अब खस्ताहाल में है इसे ही स्वर्ग बनना है। क्योंकि स्वर्ग लोक कोई उपर में नहीं है यह घरा ही कालान्तर में स्वर्ग लोक, देवलोक था और पुनः इसे ही अपना वह मूलरुप प्राप्त करना है। ऐसे में आत्माओ का परिवर्तन जो ज्ञान व योग के अभ्यास द्वारा सम्पन्न हो रहा है। वहीं एक और ऐसे परिवर्तन की जरुरत इस भूलोक पर होती है, जिससे इस भूलोक को ऐसे लोगों से मुक्ति मिलती है जो ईश्वर के कार्य में भी विरोध बने होते है। जो अपनी धरती माँ की अवाज को भी अपने कुकर्मो से कुचल रहे होते हैं। इन हालातों में परमात्मा अपनी योग माया से प्रकृति में उथल-पुथल करा इस पृथ्वी लोक को दुष्ट प्रवृति वाले लोगो से मुक्त कर इसे इसका खोया हुआ स्वर्गिक रुप प्रदान करते हैं। दुष्ट आत्माओं को उनके शरीरो से मुक्त कर पावन बनाये अपने घर परमधाम में विश्राम कराते हैं।

इस प्रकार प्रकृति में हुए भारी परिवर्तन व सतोप्रधान आत्माओ के प्रयासो से स्वर्ग बने इस पृथ्वी पर ''हम ईश्वर के साथ जियेंगे'' इस सिद्धांत का अनुसरण करने वाले लोग अपने श्रेष्ठ कर्मो के प्रारब्ध अनुरुप देवी देवता पद से सुशोभित हो धरती माँ के मस्तक को ऊँचा करते है। वे इस भूलोक को अपने श्रेष्ठ कर्मो के परिणाम से सदाकाल के लिए गौरवान्वित करते है। परमात्मा पिता भी ऐसी आत्माओ को उनके द्विय कर्तव्य मे मददगार बनने के फलस्वरुप 21 जन्मों के लिए दैवी राज्य भाग्य की प्राप्ति से सम्पन्न करते है।

परमात्म साथ और प्राप्तियां

ईश्वर का साथ जिसे प्राप्त हो वे परम सौभाग्य शाली है। पर इसका यह तो मतलब कतई नही कि उनका संसार से कोई रिश्ता नहीं है। जिन्हे ईश्वर का सानिध्य प्राप्त है वे अपनी अनुभुति के प्रमाण यह तो कह सकते है परमात्मा ही उनका संसार है। पर यह नहीं हो सकता कि उनके लिए संसार नहीं है। सही मायने में जिसका ईश्वर से जितना गहरा रिश्ता है उसका संसार से भी उतना ही गहरा सम्बन्ध है। क्योकि यह संसार यदि मनुष्य जीव के लिए पार्ट बजाने के लिए एक बेहतर स्टेज है तो उसे यह मंच उपलब्ध कराने वाला भी ईश्वर ही है। जिस संसार रुपी रंगमंच पर हम पार्ट बजा रहे हैं उसके पात्रो व उनके अभिनय को हम साक्षी होकर देखे यह जैसे विश्व से हमारा प्यार है। परमात्म साथ हममे परमात्मा के गुणो का अनुभव कराता है। ईश्वरीय गुणों का जीवन क्षेत्र मे हमे महत्तव महसूस होता है। ईश्वर के साथ जीने से हम ईश्वर की शक्तियों व कलाओ से परिचित होते हैं। शक्तियों व कलाओ के महत्तव को समझते हुए हम उन्हें स्वयं में विकसित करते है। जिन्हे ईश्वर का साथ प्राप्त है वे स्वयं को शक्ति सम्पन्न महसूसू करते हैं। ईश्वर से प्राप्त ज्ञान मनुष्य को जीवन क्षेत्र के हर पक्ष से स्पष्ट कराता है। युगो के चक्र

मे मानव को उसके द्वारा बजाये गये पार्ट व कर्मो के फल से वाफिक ईश्वरीय ज्ञान ही कराता है। यह ज्ञान ईश्वर के सानिध्य मे ही प्रात होता है। अतः जीवन का यह मूल सिद्धांत ''हम ईश्वर के साथ जियेंगे'' मानव को जीवन के प्रति गहरी दृष्टि प्रदान करता है।

ईश्वर के लिए कहा ही जाता है वे वरदाता है, भाग्यविधाता है। माता-पिता, बन्धु, सखा, सतशिक्षक, स्वामी-सतगुरु है तो निश्चित ही उनका साथ मानव को अनेकानेक प्राप्तियो से भरपूर करने वाला है। जीव संसार मे दो तरह की प्राप्तियां करता है। एक वह भौतिक रुप से जगत के पदार्थो, ऐश्वर्यो को प्राप्त होता है दूसरा वह स्व आत्मा मे ज्ञान व राजयोग के अभ्यास प्रमाण स्वराज्य को प्राप्त करता है, सतोप्रधान अवस्था को प्राप्त होता है, स्व के संस्कारो में ईश्वरत्व एवं द्वियता को प्राप्त करता है

मानव जीव के लिए दोनो ही प्रकार की प्राप्तियों का अपना -अपना महत्तव है। वर्तमान संसार में ज्ञानी पुरुष वही है जो सृष्टि परिवर्तन के सकेंतो को महसूस करते हुए आध्यात्मिक विरासत को पाने पर अपना ध्यान केन्द्रित रखे। आध्यात्मिक प्राप्तियां ही सच्चे अर्थो में मानव को ईश्वर का उपहार है इन अविनाशी प्राप्तियों को प्राप्त करना मनुष्य जीव का ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है। इस ईश्वरीय विरासत को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को धन की नही बल्कि सच्चे ईश्वरीय प्रेम एवं सच्ची निष्ठा व निस्वार्थ भाव से विश्व कल्याण के कर्मो मे प्रवृत्त रहने की जरुरत है।

ये आध्यात्मिक धरोहर मानव को सदा शांतमय व आनंदित रखती है। उसका खुशनुमा जीवन सभी के कष्टो का निवारण करता है। उसकी स्नेह भरी दृष्टि लोगो मे अपनत्व का अहसास कराये परेशानियों से मुक्ति दिलाती है। ऐसे मानव को ईश्वर भी अपना सच्चा साथ निभाने के फलस्वरुप 21 जन्मों का दैवी स्वर्गिक राज्य भाग्य प्रदान करते है। ऐसी ईश्वरीय सम्पदाओ से सम्पन्न व्यक्ति सर्वत्र सुख का संचार करता है विश्व कल्याणकारी परमपिता परमात्मा का साथ प्राप्त करना ही स्व के लिए सच्चा उपहार प्राप्त करना है।